पहिल संस्करण : अप्रील 1999


प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, सुपौल-852131, बिहार

चित्रांकन : श्री ललित कुमुद

मुद्रक : सौरभ प्रेस, सुपौल

मूल्य : पन्द्रह टाका

DHARAK OEE PAAR : Long Poem in Maithili by
JAGDISH CHANDRA THAKUR 'ANIL',
Price : Rs. 15/-


# मिथिला सँ मध्य प्रदेश धरि

1972 मे 'वैदेही' मे हमर एकटा कविता 'रुपान्तरण' छपल छल। ओही संग कविता लिखबाक क्रम शुरू भेल छल। ओही साल ई कविता लिखायल छल।

1983 मे एहि कविता केँ डायरी सँ एकटा कापी पर उतारलहुँ। कविता आदरणीय जीवकान्त जी केँ पठौलियनि।

16 अक्तूबर 83 क हुनक पत्र सँ प्रोत्साहित भेलहुँ। छपयबाक उद्देश्य सँ एकटा दोसर कागत पर उतारि पटना गेलहुँ। ओतय श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद' जी भेटलाह।

'विनोद' जी केँ कविता सुनौलियनि। लागल जे किछु आर परिश्रम कयल जायत तँ कविता आरो नीक भऽ सकैत अछि।

92 मे हम सीवान (बिहार) सँ डोमनहिल (मध्यप्रदेश) आबि गेलहुँ। मैथिली मे लिखबाक - पढ़बाक क्रम टूटि गेल छल। जीवकान्त जी सँ पत्राचार प्रारंभ भेल, हुनक स्नेह भेटल आ प्रेरणा भेटऽ लागल— मैथिली मे लिखबाक, पढ़बाक।

मैथिली मे लिखनाइ - पढ़नाइ पुनः शुरू भेल आ सोझाँ मे ई कविता आबि गेल।

आइ एहि कविता केँ अंतिम रूप मे आनि प्रेसमे पठबैत हर्ष भऽ रहल अछि।

□ जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

# हजार शब्द मे निर्मित अरण्य - रोदन

भाइ जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' मैथिली के परिचित हस्ताक्षर छथि। अनेक विधामे लिखैत छथि। एक सँ अधिक भाषाकेँ अपन अभिव्यक्तिक माध्यम बनौने छथि। मैथिलीमे ओ दीर्घ कविता लिखलनि अछि। से कम लिखल गेल अछि। एखन जे कविता अछि, से छोट सँ छोट भेल जाइत अछि। से कविताक यथार्थ थिकैक। मुदा, तकर विलोम सेहो वांछनीय अछि। तेँ हिनक एहि दीर्घ कविता मे एक विशेष काज भेल अछि।

औद्योगिक क्रांति सँ शहर बनल छैक, एकर आधार थिकैक पाइ आ मौद्रिक लाभ। तेँ ई हृदयहीन, मानवता–विहीन, ममत्व–शून्य अछि। गामक आधार छल स्नेह। गाम गरीब भेल गेल अछि, शहर धनिक भेल गेल अछि। एक दिन गाम मरि जायत, ओकरा संगहि मनुष्यता, प्रेम आ करुणा सेहो मरि जायत। एक - आध शताब्दीक पछाति शहर टा बाँचत, स्वाभाविक अछि जे मनुक्ख आ मनुक्खक बीच औपचारिक सम्बन्ध, निष्करुण आ पथरायल सम्बन्ध बाँचि जायत।

एक समय छल, जखन मनुष्य अपन सुविधा लेल औजार केँ आविष्कृत कयलक। औजार सभ सभ्यता आ संस्कृति बदलैत आ बढ़बैत गेल।

आइ तकर उनटा भए गेल छैक। आब यंत्र मालिक भेल अछि, आ मनुक्ख अपन यंत्रक दास भेल अछि। यंत्र जेना तर्क आ भावना सँ परे अछि, एहि युगक यंत्र–पोषित मनुक्ख तर्क आ भावना सँ उदासीन भेल अछि। से ओकर नियति थिकैक। कदाचित एही स्थिति केँ हिनक दीर्घ कविता रेखांकित करैत अछि।

यंत्रक अलावे मनुक्खक हृदयहीनताक एक आर कारण अछि, जनसंख्या – विस्फोट। लोक पर लोक ठाढ़ रहत, तँ लोकक प्रति घृणा होयबे करत।

एखन संसारक सभ भाषामे जे लेखक छथि से निम्न मध्यम वर्ग सँ अबैत छथि। ई सभ अपना जीवनक बारे मे लिखैत छथि। हिनका सभक जीवन मे स्थिरता छनि, गतिशीलता नहि छनि। अनुभव मे कोनो विचित्रता नहि छनि। लेखन तेँ उदास भेल जाइत अछि। ई हृदयहीनता लेखनो मे अछि। आजुक लेखन दुर्भाग्यवश हार्दिकताक प्रति समाज केँ हिलबा - डोलबा लेल प्रेरित नहि कए सकैत अछि। तेँ लेखक सभक हजार शब्द मे निर्मित कोनो रचना अरण्य – रोदन भए जाए, से संभव अछि।

लोक व्यवसायी भेल अछि। सेहो ओकर नियति थिकैक। एकटा कवि अनुभव करैत छथि जे हमरा सभ एहि संसार केँ विकसित करैत–करैत नरक बना देल अछि। कदाचित एहि नरक सँ बहरयबाक कोनो बाट नहि छैक। परम्परा दिस घुरबाक जे चिन्ता पछिला शताब्दीक कविता मे छल, से आब नहि अछि।

जगदीश जी एही बात केँ कोनो सीमा धरि अनुभव करैत छथि।

जगदीश जी अपन एहि एकालापमे औद्योगीकरणक निष्ठुरीकरणक प्रक्रिया केँ हृदयक स्तर पर रेखांकित कऽ एक पैघ काज कयलनि अछि, जे मैथिली मे एखन धरि नहि भेल छल।

हिनक विचारबाक दिशा मनुष्यताक रक्षाक बात करैत अछि, तेँ ई धन्यवादक पात्र थिकाह।

□ जीवकान्त

# एक

हम चाहैत रही
एकटा हरियर धरती
एकटा निरोग अकाश
एकटा निर्मल सरिता
हम चाहैत रही

हम सजौने रही
सपनाक एकटा उपवन
हम केने रही
अपना मोने
अपन जिनगी जीबाक
एकटा संकल्प

मुदा
पता ने किएक
अनचोके मे एकदिन
बान्हि देल गेल
हमर दूनू हाथ
हमर दूनू पयर
बन्न कऽ देल गेल
हमर दूनू आँखि
आ बन्न कऽ देल गेल
हमरा एकटा छहरदेवाली मे
आ कहि देल गेल हमरा —
यैह अहाँक वर्त्तमान थिक
यैह अहाँक भविष्य
यैह अहाँक जिनगी थिक
यैह अहाँक स्वर्ग !

पता ने किएक
हमरा बना देल गेल
बहीर
बौक
आन्हर
आ हम सभटा
सहैत रहि गेलहुँ
बनल असहाय
मुदा
हमरा भीतर
बैसल एकटा मनुक्ख
आइ कुहरि उठल अछि
आइ
तारमतौर
हमरा क्यो पूछि रहल अछि—
यैह जीवन थीक तँ ओ की छल ?
यैह सरिता थीक तँ ओ की छल ?
यैह स्वर्ग थीक तँ ओ की छल ?
ओ की छल ?
ई की थीक ?



## दू

हम बिसरि जाए चाहलहुँ
अपन देखल सपना
हम बिसरि जाए चाहलहुँ
ओ धरती....
ओ उपवन
ओ सरिता
मुदा
बिसरि नहि सकलहुँ
बिसरि नहि पबैत छी
पता नहि किएक !

हम तोड़ि देमऽ चाहैत छी
हाथक एहि बन्हन केँ
पैरक एहि बेड़ी केँ
फोलि लेमऽ चाहैत छी
आँखिक एहि पट्टी केँ
आ
ढाहि देमऽ चाहैत छी
चारूकातक देबाल केँ...

अहाँ विश्वास कऽ सकैत छी ?
अहाँ हमरा लग आबि सकैत छी ?
अहाँ केँ हमरे सप्पत
अहाँ बिजलौका बनि कऽ आउ
देखू
हमरा भीतर उठैत
बिहाड़ि आ झट्टक केँ
पानि आ पाथर केँ

एहि अन्हड़ मे
एहि ठनकामे
जरि कऽ
सुड्डाह भेल मज्जर
टूटल ठारि
गाछ सँ फराक भेल
सूखल नवकलश
अपन आत्मकथा कहैत अछि
अपन मनोव्यथा कहैत अछि



## तीन

अपन प्राण रक्षाक लेल
अनिवार्य आवश्यकताक पूर्तिक लेल
बेकल भेल
बौआ रहल छी
एम्हर सँ ओम्हर
ओम्हर सँ एम्हर
किन्तु
कतहु नहि भेटैत अछि
ओ वस्तु
हमरा जकर खगता अछि
जकरा ले' ममता अछि
घर सँ छटपटाइत
आङन अबैत छी
आङन सँ अपस्याँत भेल
अबैत छी दरबज्जा पर
दरबज्जा सँ औनाइत टोल
टोल सँ भरि गाम
आ गाम सँ लिलोह भेल
किछु काल ले'
ठाढ़ भऽ जाइत छी
एकटा चौबटिया पर।

कतहु नहि भेटैत अछि
ओ वस्तु
जे तकैत छी हम

ककरा लग जा कऽ
करू नेहोरा
सभ तँ अहिना
काटि रहल अछि अहुँछिया
सभ तँ अहिना
बौआए रहल अछि
एम्हर सँ ओम्हर
ठाढ़ अछि
माथ झुकौने
कोनो कोनटा लग
कोनो आङनक मुँहथरि लग
कोनो दरबज्जा पर
कोनो दोकान पर
कोनो मंदिर मे
अथवा
कोनो चौबटिया पर
सभहक पीठ-पाँजर एक भेल छैक
धँसल छैक आँखि
कपार पर छै पसेना
आ ठोर पर फुफरी
के अनका दिस ताकत

सभ
एक हाथेँ पेट धयने
दोसर हाथेँ टोइया-टापर दैत
बढ़ल जा रहल अछि
घिसियबैत
अपन जीवित लहाश केँ
कतहु कोनहुँ अन्हार मे।

जठरानलक दर्द सँ
आहत भेल हम
थुस्स दऽ बैसि जाइत छी



चिचिआए लगैत छी
जतेक नाम मोन अछि
सभ केँ बजबैत छी
मुदा
कहाँ ककरहु अयबाक
आहटियो सुनैत छी
आइ
कतय गेल समाज
कतय गेल गाम
कतय गेल टोल
की करैत अछि परिवार
की बजैत अछि घर
आ
की सोचैत अछि ओ
जे
काल्हि हमरा जन्म पर
पमरिया नचौने रहय ?

## चारि

मङनी मे कोनो वस्तु
कतहु भेटब असंभव अछि
सएह सोचि
आबि गेल छी हम बजार
अपन मोनक भीतर
कनैत
चिचिआइत
एकटा चिल्हका कें
चुप्प करबाक लेल

बड़की टा बजार
चहल - पहल वातावरण
अस्त - व्यस्त लोक
के अछि बनियाँ
गहिकी के अछि
बूझब कठिन अछि

देखैत छी जहाँ - तहाँ
लीखल मोट आखर मे —
एतहि सस्त मूल्य पर
सभ वस्तु भेटैत अछि
एकदम शुद्ध रूप मे

हम
अपन जेबी तकैत
साकांक्ष भऽ जाइत छी



घुसिया जाइत छी
ओही पतियानी मे
जतय
हमरा सन
लाखो लोक
पहिनहि सँ ठाढ़ अछि

अरे रे रे ई को ?
बहुत रास मुँह तँ
चिन्हारे जकाँ लगैत अछि
पता ने (मोन नहि अछि !)
जीवनक कोन पल मे
किनका सँ कखन
भेल रहय परिचय

हम सोचि नहि पबैत छी
हमर गामे बनि गेल अछि बजार
कीं इएह बजार थोक हमर गाम
की इएह बजार थीक हमर घर
की इएह बजार थीक
हमर जन्म पर
पमरिया नचौनिहार
हमर शुभचिन्तक !

हे यौ
कने सुनू तँ
अहीं कें पुछैत छी
अहाँ एतय कोना ?

अहाँ तँ कहैत रही
हमरा गाम मे
औ सभ वस्तु भेटैत अछि

जकर स्वर्गहुमे अभाव छैक
हमरा गामक लोक के
नहि जाय पड़ैत छैक बजार
जँ से कहने रही
तँ की
झुट्ठे ?
हमरा ठकबाक लेल ?
धीया - पूता जानि कऽ
परतारबाक लेल ?
आ जँ
सत्ते कहने रहो
तँ हमरा बातक जबाव दियऽ
अहाँ आ बजार
दूनू एकठाँ कोना ?



## पाँच

हम
एहि मरूभूमि बाटें
एसगरे जा रहल छी
पता ने कखन
के कतय छूटि गेलाह,
तथापि
संगमे ओ वस्तु अछि
जाहि सँ
बदलल जाइत अछि मनुक्ख
भऽ रहल अछि
मोने - मोन
प्रसन्नताक अनुभव
देखैत छी
वासनक बाहरी स्तर पर
साटल
मनोहर
अति मनोहर
एकटा ग्रामीण दृश्य
हरियर - कचोर बाध
लहलहाइत जजात
आ ककरहु प्रतीक्षामे बैसलि
रोटी आ नोन नेने
खेत केर आरि पर
घोघ तनने
दुरगमनियाँ कनियाँ सन
कोनो आकृति।

हम पैसि जाय चाहैत छी
डिब्बा केर भीतर मे
देखऽ चाहैत छी
ओ वस्तु
जे भूख केँ मेटा सकए
पियास केँ मिझा सकए
जे हरक लागनि पकड़बाले'
लोक केँ करैत होइक ठाढ़
जे खरिहान सँ
कोठी धरि
दैत होइक आकर्षण
जे सरिपहुँ आधार थीक
मनुक्खक
सम्पूर्ण क्रियाशीलताक
जे संजीवनी बनैत अछि
मनुष्यताक रक्षाक लेल

बहुत उत्सुकता सँ
एकान्त मे बैसि कऽ
हँटबैत छिऐक ढाकन
एकाएक हमरा
दाँती लागि जाइत अछि
बाहर शुद्धताक प्रमाण - पत्रक विज्ञापन
आ भीतर मिलावटि
मिश्रण एना
जेना प्रेम सँ बनाओल हो

मिश्रण मे वस्तु
अथवा
वस्तु मे मिश्रण



ई किएक ?
ई कौना
ई ककरा ले ?
ई ककरा द्वारा ?
ई कहिया धरि
हमर विधायक दृष्टि
भऽ जाइत अछि
विकलांग
हमर डबडबायल आँखि
आँखिक आगाँ
दूर...
बहुत दूर धरि
पसरल अन्हार
हमरा झिकझोरि दैत अछि
हमरा सोझाँ
ठाढ़ भऽ जाइत अछि
आरामकुर्सी
वातानुकूलित भवन
रंग - बिरंगक वायुयान
आ
एक हेंज
चिल्होरि सन मनुक्ख !

हम बिसरि जाइत छी बजार
दोकान पर
पतियानीमे
लोक सभहक अपरतीभ मुँह
बिसरि जाइत छी
चहल - पहल
अस्त - व्यस्त वातावरण

थरथरा रहल छी
छटपटा रहल छी
चक्कर आबि जाइत अछि
बन्न भऽ जाइत अछि
धमनीमे रूधिर - प्रवाह
धमनी सँ निकलऽ लगैछ आगि
एके पल मे
भऽ जाइत छी छाउर
एकदम निर्जीव
बिना हड्डीक मनुक्ख
बिना शोणितक मनुक्ख
बिना आँखिक मनुक्ख
बिना हाथ - पयरक मनुक्ख

निर्जीव बनि
फेका जाइत छी
ईंटा आ पाथर जकाँ
ढेपा आ रोड़ी जकाँ
खंती आ कोदारि जकाँ

आ पड़ल रहि जाइत छी
कोनो खेतक आरि लग
कोनो खरिहानक मेह लग
कोनो बाड़ीक कोन मे
कोनो बबूरक बोन मे
कतहु बड़का खाधिमे

भाइ रे !
हमरा दुख नहि होइतय
जँ



अपैत हाथबला लोक
रहितय अनठोया
हमरा नहि होइत तामस
जँ अपनहुँ शोणित
निरेंठ नहि रहबाक भय
नहि भेल रहितय

हम नहि करितहुँ चिन्ता
जँ
भऽ गेल रहितय समाप्त
सभटा सम्भावना
निरेंठ हाथक
पवित्र शोणितक
आ स्वस्थ सम्बन्धक

## छओ

क्यो हमर उपस्थितिक
मान्यता नहि दैत अछि
सभहक मौन स्वीकृति
नहि जानि को कहैत अछि –
जे होइत छै होम' दियौक
जे देखैत छी देखैत जाउ
जतेक देखी ततेक सोची नहि
जतेक सोचो ततेक बाजी नहि
जतेक बाजी ततेक करी नहि
औपचारिकता चलऽ दियौक...

हे, ओइ हवाइ जहाज दिस ताकू
हे, ओइ मोटर दिस देखू
वातानुकूलित भवन दिस दौड़ू
मनोरम पार्क
आ रेस्तराँ दिस भागू
कैबरेक नाचमे
जागृत करू
आत्मविश्वास
ऑन करू टीवो
सुनैत रहू
देखैत रहू
फिल्म
अथवा 'क्रिकेट - कमेन्ट्री'
निश्चिन्त सँ ।



देखू,
आइ धरि लोक
एत्तहि धरि आयल अछि
एतऽ आबि कऽ
लोक थाकि जाइत अछि
सूति रहैत अछि
चिर - निद्रा मे
अपन - अपन जीवनक
इतिहास केँ पछारि कऽ। ...

हम
मोटर तर पिचाएल
बच्चाक खूनक टघार देखै छी
करोड़ो जीबैत नेनाक
नग्न चित्र केँ देखैत छी
वातानुकूलित भवनक कात मे
ढनमनायल
असंख्य खोपड़ी केँ देखै छी
आ
भूखें छटपटाइत
देखैत छी
असंख्य बौक आत्मा सभ केँ ।

कहेन भयावह दृश्य छैक
रोमांच भरल स्थिति छैक
काँट भरल बाट छैक
बन्हकी पड़ल जिनगी छैक
आ
एक बेर फेर
बरकऽ लगैछ हिमालय
हमरा भीतर

हमरा होइत अछि तामस
एहि बौंका सभ पर
ई सभ एना किएक अछि चुप्प
किएक नहि लगबैत अछि जोर
ओना
बिना बजनहुँ तँ
कएल जा सकैत अछि
बहुत किछु !

हम
लग आबि जाइत छी
एहि बौक आत्मा सभक
बहुत लग
हम किछु करऽ चाहैत छी
हम बढ़बऽ चाहैत छी
अपन हाथ

भोजल - तीतल आँखि सँ
कहैछ बौक आत्मा सभ—
भाइ,
अहाँ नहि आउ एम्हर
हमरा लोकनि आब
रमि गेल छी
अही स्थिति मे

बेर - बेर जोर सँ
आसमर्द करैत स्वर पुनः
कानमे अबैत अछि —
अहाँके कोन रस्ता नीक लगैए ?
अहाँ कतय जाए चाहैत छी ?
अहाँ केँ महल चाही कि जंगल ?



अहाँ केँ इजोत चाही कि अन्हार ?
चुहचुही चाही कि निस्तब्धता ?
आकर्षण कि शुष्कता ?
अहाँ केँ
मुस्कुराहटि चाही
कि अरण्य - क्रन्दन ?
अहाँ केँ
सोहर नीक लगैछ
आ कि समदाउन ?

हम किछु बाजऽ चाहैत छी
किछु करऽ चाहैत छी
मुदा,
ने बाजि पबैत छी
ने किछु कऽ पबैत छी
आवाज
कंठ धरि आबि कऽ
थाकि जाइत अछि
पयर मे जाँत कयटा
बन्हा जाइत अछि
हमरा मोनमे
उठैत अछि एकटा बिहाड़ि
आ शांत भऽ जाइत अछि
मोन नहि दऽ पबैत अछि
कोनो स्पष्टीकरण

हम ठाढ़े रहि जाइत छी
जहिनाक तहिना
कोनो सीमान पर
बबूरक गाछ जकाँ

देखैत रहि जाइत छी
ओ भवन – ई मड़ैया

ओ सोफासेट – ई पटिया
आ सुनैत रहि जाइत छी
ओ अट्टहास
ई अरण्य - क्रन्दन

आ, हमरा मोनमे
नचैत रहि जाइत अछि
एकक बाद दोसर
बिहाड़ि आ पाथर
धुआँ आ धधरा
संघर्ष आ संघर्ष

अचक्के मे
भीतरमे
बहुत जोर सँ
होइत अछि आवाज
लगैत अछि जेना
हृदयक तप्पत भूमि पर
भऽ गेल हो
वज्रपात
आ
भऽ गेल हो
एक बेर फेर
हमर अकाल - मृत्यु !



# सात

गाम
अपन माटि - पानि
हुलसि कऽ करैछ
स्वागत हमर
यैह थीक ओ
झमटगर बड़क गाछ
जतऽ थाकल - ठेहिआएल लोक
घूरि कऽ अबैत अछि
आ निभेर सूति रहैत अछि
जेना बड़ी काल सँ
कनैत कोनो नेना
चुप्प भऽ जाइत अछि
माइक कोरा मे अबितहि
तोहर पुरखा लोकनि
एतहि आबि कएने छथि विश्राम
तोरहु ले' इएह स्वर्ग ...

पुनः हम आबि जाइत छी
दोसर बिहाड़िक चपेट मे
हमरा ई कोरा
लगा देने अछि उचाट
सुनैत छलहुँ
गाम मे
रङ - बिरङक जजात सँ भरल
खेत आ पथार छैक
शीतल - सुस्वादु जल सँ भरल
पोखरि - इनार छैक

आम - जामुन - लताम सँ भरल
गाछी - बिरछी छैक
बाड़ी - झाड़ी छैक
फूल - फुलवारी छैक
मंदिर–मस्जिद छैक
मायक ममत्व छैक
पितृत्वक दुलार छैक
भ्रातृत्वक प्रेम छैक
नारीत्वक मर्यादा छैक
पतित्वक गुरुत्व छैक
आर बहुत रास
रत्न छैक राखल
पौती – पेटारीमे
कोठी – बखारीमे....

हमरा नहि जानि कियैक
ई खिस्से टा बुझाइए
सीता आ रामक खिस्सा
राधा आ कृष्णक खिस्सा
सावित्री आ सत्यवानक खिस्सा
विद्यापति–मंडन आ अयाचीक खिस्सा
गांधी–सुभाष आ भगतसिंहक खिस्सा
स्नेह आ सौन्दर्यक खिस्सा
करुणा आ प्रेमक खिस्सा
आदर्श आ निष्ठाक खिस्सा
त्याग आ बलिदानक खिस्सा

ई खिस्सा
भऽ गेल अछि बाहर
हमर विश्वासक परिधि सँ



हम तँ देखैत छी
बन्न भऽ गेल अछि गाम
छोट–छोट कोठलीमे
बाहर खेत सँ बेशी
आरि–ए देखाइत अछि

बहुत किछु अछैतो
लोक अछि बेलल्ला
सभतरि छै झंझटि
आ सभठाँ दुगोला

खंड खंडमे अछि बँटल गाम
अछि जतेक लोक ततेक छथि भगवान
भगवानक नाम पर
लोक उजाड़ि दैत अछि फुलवाड़ी
तोड़ि लैत अछि सभटा फुलायल फूल
कोंढियो पर नहि अबैत छै दया !

लोक दौड़ि रहल अछि बजार
लोक दौड़ि रहल अछि कचहरी
लोक भागि रहल अछि
ताड़ी–दारूक दोकान दिश
लोक भागि रहल अछि अड्डा पर
जतय छोट–पैघ करबाक
बँटाइत छैक औजार

पियासल लोक
उनटबैत अछि अखबारक पन्ना
भूखल लोक
सुनैत अछि रंग बिरंग क भाषण
बाढ़िमे घेरायल लोक
सुनैत अछि 'क्रिकेट' क 'कमेन्ट्री'

हाय रे हमर गाम
मायक कमो नहि
ममता बिलायल
गुरुजन असंख्य
मुदा स्नेह पथरायल
भाए छथि कतेक
भ्रातृत्वक अभाव अछि
पता नहि कोन जादू-मंतरक प्रभाव अछि
समाज अछि जीविते
मनुक्ख टा मरि गेल अछि !

कतऽ गेल गाम सँ
अन्न - पानि
फूल - फल
दूध - दही
स्नेह आ सौन्दर्य
प्रेम आ करुणा
आदर्श आ निष्ठा
धैर्य आ संतोष
त्याग आ बलिदान ?

हमरा तारमतोर पूछल जा रहल अछि—
अहाँके खेत-पथार चाहो कि अन्न ?
पोखरि - इनार को जल ?
पिता की पितृत्व ?
माय को ममत्व !
स्त्री की नारीत्व ?
हमरा, आगाँ किछु सुनबाक
साहस नहि होइत अछि
आ हम दूरे सँ गाम के
एक बेर
प्रणाम कए
घुमि जाइत छी शहर दिश



## आठ

हम दूरे सँ
शहर के
अभिवादन करैत छी
पुछैत अछि शहर—
बौआ, गामक कुशल कहह !
हमरो नेनपन तँ
गामहिमे बीतल अछि
स्मृतिक पटल पर
इतिहास हमर लीखल अछि
छुट्टी नहि भेटैए
जे भेंट - घाँट करितिऐक
कतऽ कतऽ दरारि छै
जा कऽ कने देखितिऐक
मुदा, हम ओकरा बिना
जीबि नहि सकैत छी
ओकर आसमाने छै फाटल
हम सीबि नहि सकैत छी
तैयो हमरा ओकरा लेल
हृदय मे बहुत ममता अछि
हमरा ओकर जोवनक
जोवन भरि खगता अछि
ओकरा असहाय सुनि
स्नेह तँ उमड़ैत अछि
मुदा, की करू हम
किछु नहि फुरैत अछि

सोचैत छी
ओकरो
बजा लितियै अपनहि लग
कि अपनहि हम चल जाइ (?)

हमहूँ तँ एक दिन
ओकरे जकाँ रही
एकदम असहाय
अपन स्थिति सँ तंग भए
राता-राती भागि एलहुँ
आ पैसि गेलहुँ
सिनेमा - हॉल मे
रंग-बिरंगक पार्क मे
रेस्तराँ आ क्लब मे
होटल मे
हास्पीटल मे
रंग - विरंगक धंधा मे
आ शनैः शनैः
बदलि गेल हमर नाम
हमर सऽख बढ़ल
सिहन्ता बढ़ल
आ जेना-जेना
बढ़ैत गेल हमर वयस
तेना-तेना हमरा मे
अबैत गेल नवीनता
तोहूँ भेलह आकर्षित
हमर युवावस्था सँ
— तोरा धन्यवाद !

—देखइ हमरा छाती सँ
नहि निकलैछ दूध
मुदा, असंख्य लोकक खातिर



जोवद्रव्य हम बनबैत छी,
देखह, हमरा छातीमे
कल–कारखाना अछि
सोना आ चानी अछि
खाद्यान्न अछि, मिष्टान्न अछि
देखह हमरा आँखिमे
'प्लेन' अछि, 'राकेट' अछि
सूर्य अछि, चन्द्रमा अछि
आर की की अछि
कतेक कहियह ...

हमरा विश्वास अछि
तोहर जन्म
बीसम शताब्दीमे भेल छह
तों हमरा नङटे घुमैत देखि
लजैबह नहि
नङटे रहब हमरा नीक लगैत अछि

आँखि फोलि देखि लैह
हमर ई इस्पातक देह
नहि करैछ ककरहु सँ लाज
तेँ तोरहु हम कहैत छियह
ई खाल जे ओढ़ने छह
चुपचाप हटा लैह

गामक शीतलता
तोरा बना देने छह गोबर
हमरा हृदयक धमनभट्ठी मे
आबि जाह झट दऽ
एतय गर्म ज्वालामे तपि कऽ
तोहूँ भऽ जेबह
लाल — एकदम लाल

जेहने उगैत काल
रहैत छथि सूर्य
तों बिसरि जाह अपन
एखनधरिक जीवन कें
आबह
चुप्प - चाप
पैसि जाह हमरा मे ...

हमर माथ
शहरक पयर दिश झुकैत अछि
कानमे कर्कश स्वर
अबितहि रहैत अछि—
हमहीं सभहक अन्नदाता
हमहीं सभहक ज्ञानदाता
हमहीं सभहक जीवनदाता
हम ककरहु माय नहि छिऐक
मुदा,
लाखो - करोड़ो हमर संततिक संख्या अछि
सभ के सभ हमर पूजा करैत अछि

हम टुकुर - टुकुर रहि जाइत छी तकैत
एतए खेत नहि — अन्न भेटतह
पोखरि - इनार नहि — जल भेटतह
माय ?
भाए ?
पत्नी ?
पिता ?
दुर बताह नहितन
पढ़ल - लिखल लोक
कतहु एहन बात बाजय ?
सूगा बनने काज नहि चलतह



तों सूगा नहि
मनुक्ख बनऽ चाहैत छह
तँ मिझरा जाह
कोनहु जुलूस मे
लऽ लएह हाथमे
कोनहु एकटा झण्डा
सोखि लएह कोनहु नारा
बौआ,
हमहीं, गाम सँ चोरा कऽ आनल
करैत छी एतए
सभ वस्तुक बँटवारा ... ।

कहैत - कहैत शहर
बड़ी जोर सँ मारैत अछि लात
हम भटाक् दऽ खसैत छी
भंग होइत अछि
हमर मौन-स्थिति
हम जोर करैत छी
उठैत छी
आ फेर तलमला कऽ
खसि पड़ैत छी
भऽ जाइत छी बेहोश
लगैत छी गुरकऽ
सूपक भाँटा जकाँ
एम्हर सँ ओम्हर
फूटपाथ पर
गली मे
चौक पर-बजारमे
कोनो केबिन मे
कारखाना मे
लोकक भीड़मे
हेरा जाइत छी हम

पसरि जाइत अछि धुआँ
हमरा भीतर
हमरा बाहर
हमरा चारूकात
औनाए लगैछ मोन
सूखऽ लगैछ कंठ
आँखि जखन खुजैत अछि
पबैत छी अपना केँ
समुद्रक कछेरमे

हम बनि जाए चाहैत छी अगस्त्य
सोखि लेमऽ चाहैत छी समुद्र
मुदा घोंटल नहि होइए
नूनछराइन पानि
पियासें हम देखैत छी समुद्र केँ
तामसेँ हमरा तकैत अछि समुद्र

हम बान्हि लेमऽ चाहैत छी
समुद्र केँ अपना मुट्ठी मे
समुद्र हमरा पर हँसैत अछि
समुद्र हमरा लग अबैत अछि
समुद्र हमरा सँ दूर भगैत अछि
आ' हम गनैत रहि जाइत छी
समुद्रमे उठैत हिलकोर
मासक मास
सालक साल .... ।



## नओ

हमर हृदय गामक अछि
आ हम शहरक हृदयक धुकधुकोमे
चलैत छी
बजैत छी
हँसैत छी
कनैत छी
उठि–उठि खसैत छी
खसि–खसि उठैत छी

जगबा काल
नहि सुनैत छी परातो
कि महादेवक नचारी
शहर जखन जगैत अछि
हमहुँ जगैत छी
शहर जेम्हर भगैत अछि
हमहूँ दौड़ैत छी
चलबा काल
नहि पकड़ैछ क्यो आंगुर
बजबा ले' नहि पड़ैछ
ककरहु अनुमतिक आवश्यकता
नहि पुछैत अछि क्यो
हमर, मूल, गोत्र,गाम
आ कि बाबू आ बाबाक नाम
नहि सोचैत अछि क्यो
हम की करैत छी
हम कोना रहैत छी

नहि करैत अछि क्यो एतय
हँसबा लेल मनाही
कनबा लेल तँ
एकदम आजादी छै एतय

शहर कनैत लोक केँ
चुप्प नहि करैत अछि
कनैत-कनैत लोक
अपने चुप्प भऽ जाइत अछि
शहर लोकक मृत्यु केँ
नहि करैछ गिनती कोनहु दुर्घटनामे

सड़क पर
पतियानी मे
चमचमाइत
रङ-बिरङक मोटर
रातियो मे
चकमक करैत
तीनमहला, पँचमहला,
दसमहला मकान
मोहि लैत अछि हमर मोन
हवा सँ बात करैत रेलगाड़ी
आकाशमे आसमर्द करैत यान
हमरा आह्लादित करैछ
हम ताकय लगैत छी
पयर रोपबाक लेल थोड़ेक जगह
आ बनि जाइत छी
भीड़क एकटा मुइल अंग

एतय आबि कऽ हम
देखय लागल छी
मनुक्खक हड्डी
कोना चिबबैत अछि मनुक्ख



आ मनुक्ख कोना
मनुक्खक शोणित पीबि जाइत अछि

हम सोचय लागल छी
कोना चोराओल जा सकैत अछि
सूर्य आ चन्द्रमा
कोना कयल जा सकैत अछि
ग्रह आ नक्षत्रक संग बलात्कार
आ कोना भऽ सकैत अछि
कोनहु स्वर्गक अपहरण ।

एतय आबि कऽ हम
बूझऽ लागल छी
किए कोनो लोक सँ
लोक डेरा जाइत अछि
किए कोनो लोकमे
लोक हेरा जाइत अछि,

हम स्वीकार करऽ लागल छी
एकटा चम्मचक महत्व
एकटा हथगोलाक कमाल
अश्रु-गैसक महिमा,
हमहुँ सम्मिलित भऽ जाइत छी
एकटा नव आविष्कारमे—
कोना अनका पयर पर
लोक ठाढ भऽ सकैत अछि (!)

आब
हमर गामक हृदय
अलोपित भऽ गेल अछि
शहरक एहि हलचल मे
आब
शहरे हमर गाम थिक

माय थिक
भाए थिक
पत्नी थिक
प्रेमिका थिक
परिवार थिक
समाज थिक
आब शहरे हमर परम सिनेही

शहरे हमर गाम थिक
गाम माने गाम
माने जन्मभूमि
कर्मभूमि
धर्मभूमि
माने स्वर्ग-नरक सभ किछु

कारण शहर हमरा पाइ दैछ
पाइ जे जन्म दैछ
पाइ जे जोवन थिक
पाइ जे यौवन थिक
पाइ जे तन-मन थिक
पाइ जे उपवन थिक
स्नेह आ सौंदर्य थिक
प्रेम आ करुणा थिक
लक्ष्य थिक आदर्श थिक

पाइ जे मंदिर थिक
पाइ जे ईश्वर थिक
पाइ जे रोटी थिक
पाइ जे मित्र थिक
सुख-दुखक सहारा थिक
गाम सँ भेटल
कोनो चिट्ठीक उतारा थिक



पाइक उपहार केँ
हम बिसरि नहि सकैत छी
शहरक उपकार तेँ
बिसरि नहि पबैत छी
हम नतमस्तक छी
एतय आबि कऽ

हम जँ किछु
चाहैत छी बिसरब
तँ ओ अछि हमर गाम
जे हमरा जन्म पर
नचौने रहय पमरिया
किन्तु
नहि पोछि सकल रहय
नोर हमर आँखिक !

मुदा, हाय रे हमर मोन
नहि रहैछ बान्हल कोनो खुट्टा सँ
मोनक अनंत यात्रा
चलिते रहैत अछि
मोन पड़ि अबैत अछि
ओ घर आ दुआरि
खेत-पथार
हर आ फार
पोखरि-इनार
मोन पड़ि अबैत अछि
घूर तर आ दलान परक गप्प
मूड़न, मरबठ्ठी
आ उपनयनक भोज
बियाहल - मधुश्रावणी
जराउर आ द्विरागमनक हूलिमालि

सोहर–बटगमनी
डहकन आ समदाउन

मोन पड़ि अबैत अछि
कोजागराक मखान
दुर्वाक्षतक दूभि आ धान
गामक चौक
आ दुर्गा स्थान

मोन पड़ि अबैत अछि
ढोल आ डम्फा
फगुआ आ जुड़शीतल
चौठचन्द्र आ छठि पाबनि

स्मृतिक कछेर मे
बसल हमर गाम
खूब मोन पड़ि अबैत अछि
बिना कोनहु प्रयास के
आ, हम आत्मविभोर भेल
सोचऽ लगैत छी
कतेक नीक होइतइ
जँ शहर सँ
गामक दूरी
भऽ जइतैक समाप्त।



## दस

आइ हमर गाम
दौगल जा रहल अछि
गाम दिस
उठि रहल अछि
गाम सँ परदा
जेना कोनो अभिनय
प्रारंभ होमऽ जा रहल हो

ई टीक आ जनउ
ई पोथी आ पतरा
चानन आ ठोप
धोती आ कुरता
मिरजई आ पाग

ई धूप आ दीप
अरिपन आ पुरहर
मउहक आ कोबर
बटगमनी आ सोहर

लोरिक आ सलहेस
अल्हा - रुदलक आख्यान
विद्यापतिक गोत
महादेवक नचारी

कतऽ जा रहल अछि
ई सभ वस्तु
एखन कहि नहि सकैत छी

ई ड्रमकल आ ट्रैक्टर
थ्रेसर-कल्टीभेटर
सड़क आ मोटर
ईंटा आ सीमेंट
बिजली आ फोन
टीवी -रेफ्रिजरेटर

शहर अपन सनेस नेने
ठाढ़ होइछ
गामक सोझाँ
लगा दैछ अंबार
रंग बिरंगक उपहारक

कैबरे आ शराब
असरकार आ अराजनीति
झूठ आ फरेब
रिवाल्वर आ बम
हत्या आ दंगा
शोषण आ बलात्कार

थरथराइत हाथें
'नहि-नहि' करैत गाम
केने जा रहल अछि
सभटा स्वीकार ।

देखिते - देखिते
चकमक करऽ लगैत अछि
गामक फाटल-चीटल वस्त्र
मुदा टघरि रहल अछि
आँखि सँ
दहो-बहो नोर



उठा लैत अछि दूरबीन
देखैत अछि गाम
अपन आत्मा कें
हमरा सन
लाखो-करोड़ो अपन संतति कें
जे शहरक आत्मा मे
किलकारी मारि रहल अछि

ठाढ़ अछि गामक सोझाँ शहर
आ शहरक सोझाँ हमर गाम
दूनू एक दोसरा कें
तकैत रहैछ बड़ी काल
बढ़ि रहल छै दूनूक हृदयक धुकधुकी
मिलैत छैक आँखि
उमड़ैत छैक आवेश
हम देखि रहल छी प्रसन्न मुद्रा मे
कम होइत जा रहल अछि
दूनूक बीचक दूरी

हम देखि रहल छी
गाममे उगैत एकटा शहर
आ शहरमे डुबैत
हमर गाम ।

## एगारह

हम अपन गामक
शहर केँ देखैत छी
हम अपन शहरक
गाम केँ देखैत छी

नव–नव प्रयोग
आविष्कार हम देखैत छी
एक–सँ–एक
चमत्कार हम करैत छी
नित्य कतेक हत्या
बलात्कार हम देखैत छी
आ हम सभ रहि जाइत छी
ठकुआयल
मानवताक लहाश पर
आ श्मशान घाट सँ घुरलाक बाद
लोह–पानि–पाथर छूलाक बाद

हम सभ
पुनः भऽ जाइत छी बौक
आ फेर हेरा जाइत छी
कोनो–ने–कोनो
कोन आ सान्हि मे
अथवा
नुका जाइत छी
कोनो ने कोनो
मंदिर आ मस्जिदमे



आ ओतुक्का भगवान केँ
हाथ जोड़ि कहैत छियनि—
हे भगवान,
हमरा
हमर–पत्नी
आ हमरा बाल–बच्चा केँ
नीके–नाँ–राखू !
सत्ते,
एतेक बात बजैत
एतेक बात सोचैत
कतेक छोट भऽ जाइत छी हम सभ ?
कतेक लोकक
लिधुर–पसेनाक कमाइ पर
कतेक मोट भऽ जाइत छी हम सभ ?
आ हम सब बुझैत छी
ई भगवानक प्रसाद थिक !

नहि...नहि
ई नहि थिक भगवानक प्रसाद
ई थिक धृतराष्ट्रक मोह
शकुनिक छल
दुर्योधनक दुस्साहस
आ एहिमे नुकायल अछि
महाभारतक बीया ।

## बारह

स्वतंत्रताक लड़ाइ लड़ैत
'भारत माताक जय' कहैत
फांसीक तख्ता पर झुलैत,
हमहीं सभ छलहुँ
हमहीं सभ भेल रही भरकुस्सा
जालियानावाला बागमे

आइ रंग - बिरंगक देबाल ठाढ़ कयनिहार
टोक मे टोक ओझड़ौनिहार
अपनहि भाइक छाती पर
महल बनबौनिहार
खंड - खंड मे बाँटल
शोणितक पियासल
डेरायल आ डेरबैत
हमहीं सभ छी

हमरा सोझाँ
आइयो अछि पसरल अन्हार
नोरक टघार
शोणितक धार
हम मुक्त होमऽ चाहैत छी
अन्हार सँ नोरक टघार सँ
शोणितक एहि धार सँ
हम जाए चाहैत छी
धारक ओइ पार
देखऽ चाहैत छी
बनबऽ चाहैत छी
एकटा नव संसार



नहि .... नहि...
ई देबाल नहि थिक हमर नियति
हम मुक्त होमऽ चाहैत छी
अहाँक बनाओल देवाल सँ
अहाँक बनाओल भगवान सँ

आब, हम नहि बनब
अहाँक हाथक झुनझुना
अहाँक पयरक पनही
अहाँक आँखि परक चश्मा
अहाँक कोटक जेबी
हम आब नहि बनब भेड़
हम लीखब अपन भाग्य
अपनहि हाथे

हमरा मस्तिष्कमे रहताह
कणाद आ जगदीशचन्द्र बोस
मार्कोनी आ जेम्सवाट
हमरा हृदय मे रहताह
कालिदास आ विद्यापति
रवीन्द्रनाथ आ खलील जिब्रान
निराला आ नागार्जुन
हमरा सोझाँ रहताह
जनक आ अयाची
नानक आ कबीर
जीसस आ गाँधी

हम बनऽ चाहैत छी
एकटा अखंड मनुक्ख
आ मनुक्ख मात्र

□□